International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(2): 167-170

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(2): 167-170
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 16-01-2017
Accepted: 21-02-2017

डॉ. मुकेश चन्द गुप्ता
प्राध्यापक, हिन्दी स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध–विभाग, महाराजा हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. मुकेश चन्द गुप्ता
प्राध्यापक, हिन्दी स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध–विभाग, महाराजा हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

केशव कृत विज्ञानगीता में छन्द विधान

डॉ. मुकेश चन्द गुप्ता

प्रस्तावना

भारतीय छन्द शास्त्र का इतिहास बहुत प्राचीन है वेद संसार के प्राचीनतम ग्रन्थ माने जाते हैं और वेदों की रचना छन्दों में ही हुई है। इस प्रकार भारत छन्द रचना के क्षेत्र में संसार का अग्रणी है। वैदिक काल में काव्य के लिए छन्द का कितना महत्व था, यह इसी बात से प्रकट होता है कि छन्दशास्त्र को वेदों के षडांगों (शिक्षा, निरूक्त, व्याकरण, कल्प, ज्योतिष तथा छन्द) के अन्तर्गत माना गया है और उसे वेदों का पाद (चरण) कहा गया है –

छन्द पादौतु वेदस्य हस्ती कल्पोऽय कथ्यते।
ज्योतिषामयनं नेत्रं निरूक्तम् श्रोत्र मुच्यते।
शिक्षाप्राणान्तु वेदस्यु मुखं व्यांकरणं स्मृतम्।
तस्मात् सांगमधीत्येव ब्रह्मलोके महीयते।।[1]

यह ठीक ही है। वास्तव में छन्द के बिना काव्य में सम्यक् गति नहीं आती। फिर जीवन में संगीत का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। संगीत में मनुष्य तो क्या पशुओं और वृक्षलतादि को भी प्रभावित करने की शक्ति है। अतएव यदि कविता जीवन के लिए है तो संगीत को उससे अलग करना अथवा दूसरे शब्दों में छन्द बन्धन की अवहेलना करना कविता की सम्मोहक शक्ति को कम कर देना होगा। क्योंकि छन्दशास्त्र नादसौन्दर्य (संगीत) उत्पन्न करने के नियमों का शास्त्र है।

छन्द के भेद

छन्द दो प्रकार के माने गये हैं– वैदिक और लौकिक। कुछ छन्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग केवल वेदों में ही दिखाई देता हैं जैसे–अनुष्टुप, गायत्री, उण्णिक छन्द आदि। उनको वैदिक छन्द कहा गया है।
वेद से इतर शास्त्र, पुराण, काव्यादि ग्रन्थों में प्रयुक्त होने वाले छन्दों की लौकिक संज्ञा है लौकिक छन्दों के तीन भेद स्वीकार किये गये हैं–

1. मात्रिक – जाति लघु, गुरू की गणना होती है।
2. वर्णिक – (वृत्त) जिनमें गणों की गणना होती है।
3. अक्षर – इसमें केवल अक्षरों की गणना की जाती है।

हिन्दी में लौकिक छन्दों के प्रथम दो ही भेद मात्रिक और वार्णिक स्वीकार किये गये है और
कवित्त आदि छन्द जिनमें अक्षरों की गणना होती है वार्णिक छन्दों के अन्तर्गत मान लिये गये हैं–
मात्रिक छन्द– कुण्डलिया, छप्पय, दोहा, सवैया, सोरठा, चंचरी, रूपमाला ।
वार्णिक छन्द – कवित्त, भुजंगप्रयात, समानिका, निशिपालिका, नगस्वरूपिणी, दण्डक, नाराच आदि।

'विज्ञानगीता' में प्रयुक्त छन्द

केशवदास जी ने 'विज्ञानगीता' में दोनों प्रकार के छन्दों को अपनाया है। उन्होंने विज्ञानगीता के प्रारम्भ (मंगलाचरण) में छप्पय छन्द के माध्यम से निर्गुण निराकार ब्रह्मा की महिमा का वर्णन किया है जो द्रष्टव्य है –

ज्योति अनादि अनंत अमित अदभुत अरूप गुनि।
परामनंद पहुमि प्रसिद्ध पूरन प्रकास पुनि।
निर्गुन नित्य निरीह निपट निर्बान निरंजन।

सम संबेग सर्वज्ञ सर्व चित चिंतत चिदघन।
बरनी न जाय देखों सुनो नेति. नेति भाषत निगम।
ताको प्रनाम 'कैसौ' करत अनुदिन करि संयम नियम ।।[2]

सवैया छन्द के माध्यम से केशव ने यहाँ कामदेव की सुन्दरता का बहुत सन्दर वर्णन किया है–

भूषन फूलन के अंग–अंग सरासन फूलन के अंग सोहै।
पंकज चांखू बिलोचन घूमत मोदमयी मदिरा रूचि रोहै।
बाहुलता रति कंठ बिराजति केशवरूप को रूपक जोहै।
सुन्दर श्याम स्वरूप सने जग मोहन ज्यों जग के मन मौहै।।[3]

यहां केशवदास ने सवैया के माध्यम से दंभ की आत्मप्रशंसा को बहुत सुन्दरता के साथ प्रस्तुत किया है देखें–

एक समै हम सत्य पुरीहि गए अवलोकन पाप प्रनासन।
ब्रह्मा सभा भहराय उठी कहि केसव केवल प्रेम प्रकासन।
देव सहायक लोक बिनायक बैठिबे को इम ल्याय के आसन।
पावन बावन के पग को पल मोहि बताय दयौ कमलासन।।[4]

'विज्ञानगीता' में सबसे अधिक संख्या में दोहा छन्द को स्थान मिला है। केशवदास ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही जहाँगीरपुर का वर्णन दोहा छन्द के माध्यम से करते हैं –

केसव तुंगारन्य में, नदी बेतवे तीर।
जहाँगीरपुर बहु बस्यौ, पंडित–मंडित भीर ।[5]

मधुकर शाह के यश का वर्णन भी दोहा छन्द से व्यक्त किया है देखें –

बिदित ओड्छे नगर को, राजा मधुकर साहि।
गहिरवार कासीस रवि, कूलभूषन जस जाहि।।

यहाँ केशवदास ने राजा मधुकर शाह के दान एवं शौर्य का वर्णन विजय छन्द से बहुत सुन्दर ढंग से किया है –

देव–कुदेवनि के चरनोदक बोरयों सबै कलि को कुलमानी।
दारिद दुख्य बहाय दिये दिन दीरघ दान कृपान के पानी।।
लोकहि में परलोक रच्यौं धरि देह विदेहन की रजधानी।
राजा मधुकर साहि से और न रानी न और गनेस दे रानी।।[6]

राजा वीरसिंह देव की प्रशंसा केशवदास ने दंडक के माध्यम से की है –

लूटिबे के नाते पट्टनै तौ लूटियत,
तोरिबे के नातेरू गढ़ तोरि डारियत हैं।
घालिबे के नाते "गर्व घालियत राजन के,
जारिबे के नाते अघओघ जारियत है।
बाँधिबे के नाते ताल बाँधियत 'केसौराय"
मारिबे के नाते तौ दरिद्र मारियत है।
राजबीर सिंघजू के राज–जग जीतियत,
(हारिबे के नाते आनजन्म) हरियत है।।'[7]

'विज्ञानगीता' के दशवें प्रभाव में एवं आदर्श राजनीति का वर्णन दंडक के माध्यम से किया है–

छूटि गयौ प्रजनि चलन अपमारग को,
आपने आपने सतमारग समीति है।
सोहति परम हंस सूर एक कलानिधि
गाय द्विज देवतानि पूजिबे की प्रीति है।
पावै न प्रवेस विभिचारी निसिचारी चोर,
धामनि धामनि रामदेव जूकि गीति है।
केसवदास सबही के हृदय कमल फूले,
सोभित सरद किधौं आछी राजनीति है।।[8]

केशवदास ने अहंकार के शिष्य एवं दंभ के वार्तालाप की सोरठा छन्द के माध्यम से व्यक्त किया है द्रष्टव्य है –

परसि तुम्हारों बात, पथिक प्रगट प्रस्वेद कन।
जग स्वामी को गात, ज्यौ न छुवै त्यौं बैठिये।।[9]

'विज्ञानगीता' के चौथे प्रभाव में महामोह अपनी सम्पूर्ण सेना को लेकर विवेक के ऊपर चढ़ाई करता है उसे केशवदास ने चंचरी छन्द के माध्यम से व्यक्त किया है –

धर्म कर्म सर्म के समस्त जन्नदोषवंत।
तात–मात–भ्रात दोष दीन दोष जे अनंत।
मित्रदोष मंत्रिदोष मंत्रदोष के जु नाथ।
देवदोष ब्रह्मादोष लै चले अनेक साथ ।।[10]

चामर छन्द के माध्यम से यहाँ –शाल्मीनी द्वीप का वर्णन केशव ने बड़ी अच्छी तरह प्रस्तुत किया है

चारि लाख जोजनै प्रमान द्वीप जानियै।
मध्यु को समुद्र देखि सुख्क्ष मानिये।
सात खंड सातहीं तंरगिनी बहैं जहीं।
सोमरूप ईस को असेष जंतु सेवहीं।।[11]

यहाँ केशवदास ने कुंडलियाँ छन्द के माध्यम से महामोह द्वारा अपनी पत्नी मिथ्यादृष्टि के विचार विमर्श की चर्चा बड़े सुन्दर ढंग से की है

देही न्यारों देह तें, कहत अयाने लोग।
दुःसह दुःख हयाँ देखि परलोक करहिंगे भोग।
लोक करहिंगे भोग जोग–संयम व्रत साधे।
भूले जहँ तहँ भ्रमत सकल सोभा सुख बाँधे।
भूले जहँ तहँ भ्रमत होत तन सों न सनेही ।
जो झूठो है देह ततो अति झूठो देही।।[12]

विज्ञानगीता में केशवदास जी ने भुजंगप्रयात छन्द का भी बहुत सुन्दर वर्णन किया है–

कहा कामिनी तै कहीं बात तोसों।
छमी प्रेम नाती कहीं बात तोसों।
वहै ग्राम हौं तो सुलैही रह्यौ हों।
सदा सर्वदा लोक लोकेस ह्यायौ हौं।।
तहाँ लोग मेरे रहें वेषधारी।
जटी दंड मुंडी जती ब्रह्मचारी।
पढै शास्त्र कों वेद विद्या विरोधी।
महाचंड पाखंड धर्मी प्रबोधी।।[13]

यहाँ केशवदास ने अपने शब्दों को नाराच छन्द के माध्यम से व्यक्त किया है। इसमें महामोह का अपनी पत्नी से वार्तालाप का वर्णन किया है।

असेष सर्वदा विसेष जीति नर्मदा लई।
जगत्प्रकाश की सुता कृतान्त सोदरी गई ।।
सरस्वती पतिहनां चिन्हाउ जोर आपने।
लईजु जन्हु एकही चुरू अँचै सु कोगनै ।।[14]

'विज्ञानगीता' के आठवें प्रभाव में केशवदास जी ने रूपमाला छन्द का माध्यम बनाकर शांति के करूणा से कथन को बड़े सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है –

मो बिना न अन्हाति जेंवति करति नाहिन पान।
नैकु के विछुरे भटू घटमें न राखति प्रान।
चेतिका करूना रची सब छाँडि और उपाय।
क्यौं जियो जननी बिना मरिहूँ मिले जौ आय।।
नैन नीरनि भरि कहै करूना सखी यह बात।
मोहि जीवित क्यों मरै सुनि मंत्र अब अवदात।
जोग जाग विराग के थल सूर–नंदिनि–तीर।
पुन्य आश्रम ठौर ठौर बिलोकिये थरि धीर।।[15]

'विज्ञानगीता' के आठवें प्रभाव में शान्ति और करूण के वार्तालाप को केशवदास ने तारक छन्द के माध्यम से स्पष्ट किया है –

इनको कबहूँ न बिलोकन कीजै।
अरूयों करियै तो निरैपग दीजै।
विपदा महँ आनि भजौ दुख कीजै।
बरू बूडि नदी मरिये विष पीजै।।[16]

पाँचवे प्रभाव में तोमरछन्द का प्रयोग देखें इसमें महामोह का युद्ध प्रस्थान का वर्णन कितने सुन्दर ढंग से किया गया है –

कलहै कही सुनी बात। उठि चले मन के तात।
बहु उठी दुदुभि–बाजि। तहं बिबिध सेना साजि।।[17]

केशवदास ने चौपाई छन्द के माध्यम से वशिष्ठ द्वारा दिए गये उपदेश में राम नाम की महिमा प्रतिपादित की गई है।

जब सब वेद पुरान नसै हैं।
जब तप तीरथ मध्य बसैहैं।
सो उपदेस जु मर कि बारै।
तब कलि केवल नाम उधारै।[18]

हरिगीतिका छन्द के माध्यम से जंबूद्वीप की प्रशंसा की गई है देखें –

हरिवर्ष खंड नृसिंह को प्रहलाद सेवत साधु।
सुभ केतुमाल रमारमेसहिं काम कर्म कराधु।
सुभ्रता हिरन्मय खंड मंडित यत्र कूरम वेष।
पितृनाथ सेवत अर्जमा, मन काय वाक विशेष ।।[19]

राजधर्म का विवेक के प्रति कथन में केशव ने दोधक छन्द की सुन्दर व्यंजना की है –

संतत भोगिन में रस जाके।
राज नसे अरू पाप प्रजा के।
ताते महीपति दंड सँचारै।
दंड बिना नर धर्म न धारै।।[20]

'विज्ञानगीता' के तृतीय प्रभाव मे केशवदास ने मरहट्ठा छन्द का प्रयोग करके तत्कालीन दिल्ली नगर के दम्भ ओर विलासिता की एक झलक प्रस्तुत की है –

काम कुतूहल में विलसै निसि बारबधु मन–मान हरै।
प्रात अन्हाया बनाय दै टीकनि उज्जल अंबर अंग धरै।
ऐसो तपौ तप ऐसो जपौ जप एसो पढ़ौ श्रुतिसार सरै।
ऐसे लोग जयौ ऐसो जज्ञ भयौ बहु लोगनि को उपदेश करै।।[21]

गाधि ऋषि से भगवान के कथन को केशव ने सुंदरी छन्द के माध्यम से व्यक्त किया है –

बाहिर आवहु बिप्र तजो जल।
आनि तपोजल को गाहिजै फल।
मागहुँ जो जिय मांझ रह्यौ बसि।
आनि लहौ भगवत कह्यौ हसि।।[22]

प्रस्तुत छन्द मदन मनोहर में वर्षा की प्रसन्नता बादलों की गर्जना के रूप में इन्द्र ने सूर्य के प्रति अपना क्रोध भाव प्रकट किया है –

घनघोर किधौं भटपुंजन पै तरवार कढ़ी तड़िता दुति भीनी।
गहि सक्र सरासन 'केसव" जेति समूहनि की पदबी बहुलीनी।
कमला तजि पदूमिनी बूडिमरी धरनी कहँ चंदबधु गहि दीनी।
वरषा हरषी की बजाय निसान पुरंदर सूरज की रिस कीनी।[23]

भ्रम का विवेक प्रति कथन में स्वागता छन्द का प्रयोग हुआ है देखें –

महामोह महिमंडल लीनौ।
तुम्हे राज यह आयसु दीनौ।
तजौ आजु सिव की रजधानी।
रहौ जाय जहँ श्री बिधि बानी।।[24]

ग्यारहवें प्रभाव में महामोह के प्रति धैर्य के कथन को केशवदास ने चंचला छन्द के माध्यम से व्यक्त किया है –

सासना दई विवेक राजराज व्हौ कृपाल।
छोड़ि देहु जीव को पिता करै महा बिहाल।
दूरि के सबै बिचार भाजि जाहु सिंधु पार।
जौ न जाहु विस्नुभक्ति अग्नि तेज होउ छार।।[25]

मोह और मिथ्यादृष्टि के संवाद प्रसंग को तोटक के माध्यम से व्यक्त किया है –

यह बात सुनी तरूनी जबही।
हँसि बोलि उठी सु सुनी सब ही।
जिनि भूलहु भर्म मृषानि अबै।
हम पै सुनिते पुर धर्म सबै।[26]

बीसवें प्रभाव में जीव का देवी के प्रति कथन में केशवदास ने त्रिभंगी छन्द का प्रयोग किया है –

निंदे बहु बारनि करि निरधारनि बस्तु विचारनि संसारनि।
फल–फूल अहारी बिपिन बिहारी तजि बिभिचारी मति चारनि।
तजि दुःख–सुख साधनि नाथ अनाथनि गुनगन साथनि श्री नाथनि।
भ्रमभार अतीतनि मोह बितीतनि इन्द्रिय जीतनि दिन रातनि।[27]

केशवदास ने केवल हिन्दी के छन्दों का ही प्रयोग नहीं किया है बल्कि विज्ञानगीता में संस्कृत श्लोकों को भी स्थान दिया गया है देखें –

अकल्पहिमवास्तव्यं देहेनानेन चेतन।
एवंहिनिहतिर्देवी निश्चिता परमेश्वरी।

X X X X

न कांक्षेविजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च।
कि नो राज्येन गोविंद किं भौगैर्जीवितेन ।।[28]

वास्तव में केशवदास ने 'विज्ञानगीता' में छन्दों की योजना बहुत ही सुन्दरता के साथ प्रस्तुत की है ऐसा कवि होना दुर्लभ है। इति।

संदर्भ

1. भानु : छन्द प्रभाकर, पृष्ठसंख्या – 21
2. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 23–1/1
3. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 36–2/4
4. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 46–3/18
5. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 24–1/3–1/15
6. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 28–1/16
7. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 31–1/22
8. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 131–10/14
9. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 46–3/16
10. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 52–4/4
11. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 56–4/22
12. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 61–5/2
13. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 65–5/18–19
14. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार) : केशवदास : विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 72–6/22
15. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 69–8/46
16. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 104–8/46
17. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 52–4/3
18. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 314–21/63
19. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 58–4/35
20. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 112–9/29
21. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 42–3/3
22. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 168–13/31
23. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 125–10/7
24. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 144–11/15
25. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 145–11/19
26. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 66–4/19
27. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 291–21/41
28. डा० किशोरी लाल (व्याख्याकार): केशवदासः विज्ञानगीता, पृष्ठ संख्या – 113–9/32